लिया जाता है कि श्रमिक की कीमत के साथ श्रमिक की माँग बढ़ जाती है जिससे रोजगार और श्रमिकों की संभावित माँग के बीच अंतर हो सकता है। इस आधार पर बनाया गया माँग वक्र मजदूरी की कीमत और मजदूरी की मात्रा के बीच संबंध दर्शाती है।

यद्यपि मजदूरी के कथन के रूप में श्रमिक की माँग के दृष्टिकोण का सैद्धान्तिक कीमत विश्लेषण में काफी महत्व रखती है परन्तु श्रम अर्थशास्त्र यह विश्लेषण उपयोगी नहीं है।

प्रथम अवधारणा के अनुसार श्रम की माँग से तात्पर्य श्रम की उस मात्रा से है जो किसी उद्योगपति द्वारा किसी दर पर खरीदने के लिए तत्पर है।

श्रम की माँग का अध्ययन हम निम्नलिखित तथ्यों के द्वारा कर सकते हैं।

(क) एक उद्योगपति द्वारा श्रम की माँग
(ख) समाज में मजदूरी एवं श्रम की माँग में संबंध
(ग) श्रम की माँग को प्रभावित करने वाले घटक।

संपूर्ण समाज के संबंध में श्रम की माँग का अर्थ रोजगार की मात्रा से लिया जा सकता है क्योंकि श्रम की माँग जितनी बढ़ेगी, लोगों को उतना ही अधिक कार्य मिलेगा, अर्थात श्रम का माँग बढ़ना या रोजगार बढ़ना दोनों एक ही बात है। जिस प्रकार एक उद्योगपति अपनी श्रम की माँग बढ़ा देता है तथा उसी तरह देश के रोजगार में वृद्धि होती है। यह विवादास्पद बात है, जिस पर विभिन्न अर्थशास्त्रियों का अलग-अलग मत है। 1999 ई० में प्रो० विलफोर्ड (Wilford) के कथनानुसार "विज्ञापन के व्यापारी जानते हैं कि कीमत घटाने से ही बिक्री बढ़ती है और बात सबूत, जूते आदि का निर्माण होता है वह विश्वास रखते कहा जा सकता है कि बेरोजगारी इस कारण होती कि मजदूरी की ऊँची लागत के कारण वस्तुएँ इतनी महंगी हो जाती हैं कि सब की बिक्री नहीं हो पाती"

M